घोषणा

मैं अर्पणा कुमारी, एतद् द्वारा यह घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध **"साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिंदी उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (महिला साहित्यकारों के विशेष संदर्भ में)"**, हिंदी विभाग, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम के पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत है| जहाँ तक मुझे ज्ञात है कि इस शोध-सामग्री का उपयोग कहीं भी शोध-उपाधि के लिए नहीं किया गया है, न ही यह शोध-शीर्षक अन्यत्र शोधोपाधि का आधार बना है|

DECLARATION

I do hereby that the thesis titled **"Sahitya Akademi Puraskrit Hindi Upanyason Ka Vishleshnatmak Adhyayan (Mahila Sahityakaron Ke Vishesh Sandarbh mein)"** Submitted by to Tezpur University, Tezpur, Assam in part fulfillment of the requirements for the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi Department under the school of Humanities and Social Sciences, is my own and that not been submitted to any other institution, including the university in any other form or published at any time before.

अर्पणा कुमारी

Arpana Kumari

शोधार्थी

हिंदी विभाग

तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर

असम-784028

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अर्पणा कुमारी, शोधार्थी, हिंदी विभाग, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम ने अपना शोध-प्रबंध **"साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिंदी उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (महिला साहित्यकारों के विशेष संदर्भ में)"** मेरे पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में इस विश्वविद्यालय की पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध शोधार्थी के मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य का परिणाम है। मेरे संज्ञान में इस अनुसंधान-सामग्री का उपयोग आंशिक या पूर्णरूप से अन्यत्र शोधोपाधि हेतु नहीं किया गया है।

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"Sahitya Akademi Puraskrit Hindi Upanyason Ka Vishleshnatmak Adhyayan (Mahila Sahityakaron Ke Vishesh Sandarbh mein)"** submitted to the School of Humanities and Social Sciences, Tezpur University, Tezpur in partial fulfillment for the award of the degree of Doctor of philosophy in Hindi is a record of research work carried out by Arpana Kumari under my supervision and guidance.

All help received by her from various sources have been duly acknowledged. No part of the thesis has been submitted elsewhere for the award of any other degree.

शोध-निर्देशक

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी
प्रोफेसर हिंदी विभाग
मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

आभार

सर्वप्रथम ईश्वर की असीम कृपा एवं मुझमें आत्मविश्वास तथा स्वाबलंबन का बीज अंकुरित करने वाले मेरे माता-पिता को शत्-शत् नमन करती हूँ| प्रस्तुत शोध-कार्य मेरे पिता तुल्य आदरणीय गुरुवर्य प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी सर के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ है| उनका स्नेह पूर्ण प्रोत्साहन मुझे कार्य करने की गति एवं प्रेरणा देता रहा है| वस्तुतः प्रस्तुत शोध प्रबंध उन्हीं के विद्वतापूर्ण एवं सारगर्भित मार्ग निर्देशन तथा आशीर्वाद का फल है| उनके परिवार से भी सदैव आत्मीयता एवं प्रेरणा मिलती रही| अतः उनके एवं उनके परिवार के प्रति मेरी असीम श्रद्धा निवेदित है|

इस शोध कार्य के दौरान श्रद्धेय अलका सरावगी, नासिरा शर्मा एवं मृदुला गर्ग का भी महत्वपूर्ण सहयोग रहा आपके प्रति आभार प्रकट करना में अपना कर्तव्य समझती हूँ|

मैं अपनी बहन डॉ. अर्चना, भाई अभिमन्यु, डॉ. पुष्पेंद्र भैया, प्रजा भाई एवं विजय चाचा जी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने विषम परिस्थितियों में मुझे संभाला| आप सबसे मिली प्रेरणा और प्रोत्साहन के बल पर मैं अपना कार्य संपन्न कर पायी अतः मैं आप सभी को धन्यवाद देती हूँ|

मैं इस शोध यात्रा के सभी स्नेहीजन दुष्यंत भैया एवं उनका परिवार, डॉ. अनिल पुष्कर भैया, डॉ. पल्लवी दी एवं उनका परिवार, एवं शोधार्थी मित्र पंचराज, पूजा, हेमंत आप सभी के उचित सलाह एवं सहयोग के लिए विशेष रूप से धन्यवाद करती हूँ| प्रियु, मयूरी, रेखा, रुचि, करिश्मा, आरती का भी धन्यवाद! जिनके स्नेहपूर्ण व्यवहार से में अपना कार्य कुशलतापूर्वक कर सकी| मैं तेजपुर विश्वविदयालय के सभी अध्यापक, कर्मचारियों, एवं पदाधिकारी गणों का उनके सहयोग के लिए अपना आभार ज्ञापित करती हूँ| साथ ही विशेष कर पद्मुनी माही के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ|

इस शोध कार्य के लिए तेजपुर विश्वविद्यालय द्वारा मुझे फेलोशिप प्रदान की गयी जिसके लिए मैं विश्वविद्यालय का विशेष आभार व्यक्त करती हूँ| दिल्ल्ली विश्वविद्यालय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय एवं जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जहाँ से मुझे आवश्यक सामग्री प्राप्त हुई|

शोध-कार्य बहुत ही श्रमसाध्य होता है| इसके पीछे अनगिनत शुभचिंतकों की प्रेरणाएँ एवं आकांक्षाएँ निहित होती है| इन्हीं शुभेक्षाओं के प्रतिफलन स्वरूप मैं यह शोध कार्य संपन्न कर सकी| अतः मैं उन सभी के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इस सृजन यात्रा में पूर्णतः या अंशतः मेरा सहयोग किया|

अर्पणा कुमारी

शोधार्थी

हिंदी विभाग

तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)

भूमिका

साहित्य को ज्ञान राशि का संचित कोश कहा जाता है| साहित्य किसी भी समय की घटना को अनुभव करने की क्षमता प्रदान करता है| एक रचनाकार अपने अनुभव, विचार और भावनाओं द्वारा समाज के अनेक विषयों को आधार बनाता है जो समय-समय पर लोगों का मनोरंजन भी करे और उसमें जागरूकता का संचार भी| कलम की ताकत को दुनिया की सबसे बड़ी ताकतों में से एक मानी जाती है| 'अकबर इलाहाबादी' लिखते हैं 'जब तोप मुकाबिल हो तो अख़बार निकालो'| समाज में ऐसे कई कलम के सिपाही और लेखनी के जादूगर हुए जिनकी कलम से निकले हुए शब्दों से ऐसी-ऐसी क्रांति हुई जिसके कारण समाज में कई स्तरों पर क्रांतिकारी बदलाव देखे गए| भारत को आजादी दिलाने में भी ऐसे ही कई कलम के कारीगर शामिल हुए, जिन्हें युगों-युगों तक याद रखा जायेगा| इन सबका परिणाम यह हुआ कि साहित्य समाज में बदलाव लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनता चला गया| आज साहित्य की किसी भी विधा को उठाकर देखें उसमें समाज की तमाम समस्याओं और घटनाओं को उजागर करने की क्षमता है| इस प्रकार मानव जीवन में साहित्य की महत्ता को भलीभांति समझा जा सकता है| आजादी के बाद ऐसे साहित्यकारों के साहित्य को पोषित करने के लिए सम्मान और पुरस्कारों का प्रावधान बनाया गया| इसका दूसरा मकसद यह भी था कि आम जन ऐसे रचनाकारों को पढ़कर उनसे प्रेरणा लें और अपने जीवन को सही दिशा प्रदान कर सकें|

पुरस्कार हमेशा से रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का जरिया रहा है| यह चिंतन का विषय है कि लेखक से पुरस्कार की प्रतिष्ठा होती है या पुरस्कार से लेखक प्रतिष्ठा पाता है| मेरा यह मानना है कि किसी भी रचना को लेकर हमारे सामने प्रश्न यह उठना चाहिए कि उस कृति की महत्ता किन बातों पर निर्भर करती है| कोई रचनाकार किन

तत्वों का चयन कर साहित्य रचता है| उसका विषय विस्तार कहाँ तक पहुँचता है| किन-किन अनछुए पहलुओं को रचनाकार अपने लेखन का हिस्सा बनाता है| एवं साहित्य और समाज में वह कृति कितनी उपयोगी सिद्ध होती है| न कि पुरस्कार किसे प्राप्त है उनपर, तो यह श्लाघ्य है | इस शोध-प्रबंध में ऐसे ही कुछ पुरस्कृत लेखकों के उपन्यासों पर विचार किया गया है|

विषय क्षेत्र की विशालता के कारण उपन्यास साहित्य की सबसे सम्पन्न विधाओं में से एक है| इसमें रचनाकार समाज के विभिन्न रूपों को स्पष्ट तौर पर दिखाने का प्रयास करता है| इसमें वह कुछ जगबीती लिखता है और कुछ आपबीती भी रचता है| कथा लेखन के क्षेत्र में महिला रचनाकारों की उपस्थिति प्रेमचंद के दौर में हो चुकी थी, लेकिन उपन्यास के क्षेत्र में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद इनके सशक्त रूप को एक बड़े फलक पर देखा जाने लगा| वर्तमान साहित्य की विभिन्न विधाओं में महिला रचनाकारों की उपस्थिति में हुई वृद्धि को देखा जा सकता है, इनके योगदान से साहित्य और समाज को कई तरह से लाभ हुआ है|

साहित्य अकादमी पुरस्कार भारत का एक प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मान है, जो प्रतिवर्ष भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमुख भाषाओं में प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक कृति को प्रदान किया जाता है| हिन्दी साहित्य में अब तक 23 उपन्यासों को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें पांच महिला लेखिका हैं जिन्हें यह सम्मान दिया गया है| मैंने इन समस्त उपन्यासों को ध्यान में रखते हुए विशेष तौर पर महिला साहित्यकारों के उपन्यासों पर इस शोध कार्य को पूर्ण किया है| मेरे शोध का विषय है- “साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिंदी उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (महिला

साहित्यकारों के विशेष सन्दर्भ में")| इन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में वर्णित विषयों को ध्यान में रखते हुए मैंने इस शोध-प्रबंध को पांच अध्यायों में विभाजित किया है-

पहला अध्याय 'साहित्य अकादमी पुरस्कृत हिन्दी उपन्यासों का परिचयात्मक सर्वेक्षण' है| इस अध्याय को कालक्रम के अनुसार चार उप-अध्याय में बांटा गया है| जिसमें सभी तेईस उपन्यासकारों का सामान्य परिचय देते हुए उनके पुरस्कृत उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है|

दूसरा अध्याय 'पुरस्कृत उपन्यासों में वर्णित युगीन परिस्थितियां' है| जिसके अंतर्गत युगीन परिस्थितियों को स्पष्ट करते हुए उसका सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है| इस अध्याय को कुल पांच उप-अध्याय में वर्गीकृत किया गया है| जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं को रेखांकित करते हुए विवेचन प्रस्तुत किया गया है|

तीसरा अध्याय 'पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में वर्णित वैयक्तिक समस्याओं' पर केंद्रित है| इस अध्याय में उपन्यास में प्रतिबिंबित व्यक्ति जीवन की उन तमाम समस्याओं को देखा गया है जो आधुनिक समय की देन है| इस अध्याय को मैंने पांच उप-अध्यायों में वर्गीकृत कर विवेचन किया है| जिसके अंतर्गत 'अकेलापन व अजनबियत' की समस्याओं को आधार बनाकर व्याख्यायित किया है| इसके आगे 'विस्थापन की समस्या', 'रिश्तों का सिमटता दायरा', उपन्यासों में व्यक्त आधुनिक युग में रिश्तों में आए परिवर्त्तन और उससे उत्पन्न समस्याओं को अंकित किया है| 'स्वप्न का संघर्ष' एक प्रमुख समस्या है| स्वप्न के मनोविज्ञान को केंद्र में रखकर उसके प्रकार एवं प्रतीकों का भी विवेचन हुआ है| साथ ही 'आत्महत्या की समस्या' को उपन्यासों के माध्यम से विश्लेषित किया गया है|

चौथा अध्याय 'पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में वर्णित स्त्री जीवन का अध्ययन' है| इस अध्याय को कुल चार उप-अध्याय में वर्गीकृत किया है| जिसमें पितृसत्तात्मक समाज की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए अस्मिता से जुड़े सवालों का विश्लेषण किया है| इस अध्याय में लेखिकाओं के उपन्यासों में विवेचित पारिवारिक जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है| जिसमें स्त्रियों को श्रम, प्रजनन, और लैंगिकता के आधार पर व्याख्यायित किया गया है| उपन्यासों में वर्णित पुरुष प्रधान समाज की सच्चाइयों पर प्रकाश डाला गया है| इस उपअध्याय में स्त्री देह पर हो रहे अत्याचार को केन्द्र में रखकर कार्य किया गया है| साथ ही इस अध्याय में लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त गाली विषयक समस्याओं का भी विश्लेषण किया गया है|

पाँचवा अध्याय 'पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में वर्णित भाषा और शैली' है|

पांच अध्यायों के उपरांत **उपसंहार** दिया गया है, जिसके द्वारा शोध-प्रबंध की सार्थकता और महत्त्व पर विचार प्रस्तुत किया गया है और इसके माध्यम से निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया गया है| तत्पश्चात संदर्भ-ग्रंथ सूची है| और सबसे अंत में परिशिष्ट दिया गया है, जिसमें सभी लेखिकाओं के साथ लिए गए साक्षात्कार को संकलित किया गया है|